ए बात बारीक अति बुजरक, दोऊ सरूपों सुख बातन।
करी परीछा इस्क साहेबी, सुख होसी नूर रूहन।। ६४ ।।

यह बात खास है और इसकी बड़ी भारी महिमा है कि दोनों स्वरूपों के सुख अलग-अलग तरह के हैं। इश्क और साहेबी दिखाने के वास्ते ही यह खेल बनाया जिससे अक्षर और रूहों को सुख प्राप्त होगा।

करसी कायम खाकीबुत को, करके नूर सनमुख।
इन से अछर और मोमिन, लेसी कायम अर्स के सुख।। ६५ ।।

अक्षरब्रह्म के सामने जीवों को खड़ा करके बहिश्तों में अखण्ड करेंगे जिससे अक्षरब्रह्म और मोमिन अखण्ड घर के सुख लेंगे।

ए सुख जानें नूरजमाल, या जानें नूर अछर।
या हम रूहें जानहीं, कहे महामत हुकमें यों कर।। ६६ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से कहते हैं कि इस सुख को अक्षरातीत श्री राजजी महाराज, अक्षरब्रह्म और हम रूहें ही जानती हैं।

|| प्रकरण || २ || चौपाई || १३१ ||

आसिक इन चरन की, आसिक की रूह चरन।
एह जुदागी क्यों सहे, रूह बिना अपने तन।। १ ।।

हम रूहों के तन श्री राजजी महाराज के चरणों के आशिक हैं, श्री राजजी महाराज के चरण ही हमारी रूह हैं, इसलिए तन और रूह कभी भी जुदा नहीं हो सकते।

जो रूह अर्स की मोमिन, तिन सब की ए निसबत।
दिल मोमिन अर्स इन माएनों, इन दिल में हक सूरत।। २ ।।

जितनी भी परमधाम की रूहें हैं, सबकी यही निसबत (सम्बन्ध) है। इस तरह से श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिनों का दिल है, क्योंकि श्री राजजी महाराज स्वयं मोमिनों के दिल में विराजमान हैं।

हक सूरत रूह मोमिन, निसबत एह असल।
मोमिन रूहें कही अर्स की, तो अर्स कह्या मोमिन दिल।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप और मोमिनों की रूह का सम्बन्ध (निसबत) मूल परमधाम से है, क्योंकि मोमिन परमधाम के हैं, इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है।

ए चरन दोऊ हक के, आए धरे मेरे दिल माहें।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, आई न्यामत हक हैं जांहें।। ४ ।।

इस संसार में श्री राजजी महाराज के चरण कमल मेरे दिल में विराजमान हैं, इसलिए मोमिनों के दिल को इस संसार में अर्श कहा है। श्री राजजी महाराज स्वयं जिसके दिल में बैठे हैं, सभी न्यामतें स्वयं वहां आ गईं।

ए चरन हुए अर्स मासूक, हुआ अर्स चरन दिल एक।
ए वाहेदत जुदागी क्यों होए, जो ताले लिखी ए नेक।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल हम माशूक रूहों का अर्श है, इसलिए जिस दिल में श्री राजजी महाराज आ गए, वह दिल दोनों का अर्श हो गया, क्योंकि हमारा अर्श श्री राजजी के चरण कमल हैं और श्री राजजी का अर्श मोमिनों का दिल है, इसलिए दोनों अर्श एक हो गए, इसलिए यह दोनों जुदा कैसे हों जो मूल से ही एक हैं।

Nijanand App

अर्स अरवाहें जो वाहेदत में, सो सब तले हक नजर।
इस्क सुराही हाथ हक के, रूहों पिलावें भर भर।। ६ ।।

परमधाम में जो रूहें श्री राजजी महाराज के चरणों तले मूल-मिलावे में श्री राजजी की नजर के सामने बैठी हैं, उन्हें श्री राजजी महाराज अपने दिल की गंजान गंज इश्क से भरी सुराही से भर-भरकर प्याले पिलाते हैं।

इस्क हक के दिल में, सो दिल पूरन गंज अपार।
असल तन इत जिनों, सोए रस पीवनहार।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज का दिल गंजान गंज इश्क से भरा है। परमधाम में जिनकी परआतम है, वही उस इश्क के रस को पीती हैं।

सराब हक सुराही का, पिया अरवाहों जिन।
आठों जाम चौसठ घड़ी, क्यों उतरे मस्ती तिन।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज की इश्क की सुराही से जिस रूह ने इश्क का रस पी लिया, वह रात-दिन अपने श्री राजजी महाराज में मग्न रहती है।

असल अरवाहें अर्स की, जो हैं रूह मोमिन।
एक निसबत जानें हक की, जिनों मासूक प्यारे चरन।। ९ ।।

परमधाम की जो रूहें असल मोमिन हैं, उन्हें ही अपने माशूक श्री राजजी महाराज के चरण प्यारे हैं। वही समझती हैं कि मैं श्री राजजी महाराज की अंगना हूं।

मोमिन वासा चरन तले, अर्स अरवाहों का मूल।
मोमिन आए इत अर्स से, तो फुरमान ल्याए रसूल।। १० ।।

मोमिन सदा ही श्री राजजी महाराज के चरणों तले जहां उनका मूल ठिकाना है, रहते हैं, क्योंकि चरण ही उनका अर्श है। अब खेल में मोमिन अर्श से उतरे हैं। उनके वास्ते श्री राजजी महाराज ने कुरान के ज्ञान को लेकर रसूल को भेजा।

तो कह्या मोमिन खाना दीदार, पानी पीवना दोस्ती हक।
तवाफ सिजदा इतहीं, करें रूह कुरबानी मुतलक।। ११ ।।

मोमिनों का खाना, दीदार है और पानी पीना श्री राजजी महाराज से दोस्ती है, इसलिए मोमिनों की परिकरमा और सिजदा श्री राजजी के चरणों में ही होता है, इसलिए रूहें निश्चित रूप से अपने धनी के लिए कुर्बानी करेंगी।

रूहें अव्वल आखिर इतहीं, मोमिन ना दूजा ठौर।
कहे चौदे तबक जरा नहीं, बिना वाहेदत ना कछू और।। १२ ।।

मोमिनों के लिए शुरू से आखिर तक श्री राजजी महाराज के चरणों तले ही उनका ठिकाना है, इसलिए कुरान में लिखा है कि मोमिन चौदह तबकों को रद्द करके श्री राजजी के चरणों में अपना चित्त लगाएंगे।

Nijanand App

जो अब भी जाहेर ना होती, बका हक सूरत।
तो क्यों होती दुनी हैयाती, क्यों भिस्त द्वार खोलत।। १३ ।।

यदि अब भी श्री राजजी महाराज का स्वरूप और अखण्ड परमधाम की हकीकत जाहिर न होती तो बहिश्तों के दरवाजे कौन खोलता? दुनियां के आवागमन के चक्कर से छुड़ाकर अखण्ड मुक्ति कौन देता?

जो दीदार न होता दुनी को, तो क्यों करते इमाम इमामत।
क्यों जानते कयामत को, जो जाहेर न होती निसबत।। १४ ।।

यदि दुनियां को श्री राजजी महाराज की पहचान न होती तो फिर इमाम मेंहदी न्यायाधीश बनकर कैसे आते? यह इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज पारब्रह्म के स्वरूप हैं। पहचान न होती तो कैसे दुनियां जानती कि अखण्ड होने का समय आ गया है।

अर्स बका द्वार न खोलते, तो क्यों होती सिफायत महंमद।
हक के कौल सबे मिले, जो काफर करत थे रद।। १५ ।।

रसूल साहब ने कुरान में जो आखिरत के समय खुदा के आने की बात कही थी, जिसे उस समय काफिर लोग व्यर्थ की बात समझते थे, अब वह सब सत्य हो रही हैं। अब श्री राजजी महाराज स्वयं आकर अखण्ड परमधाम के दरवाजे न खोलते तो रसूल साहब की बातें कैसे सत्य होतीं?

कह्या अव्वल महंमद ने, हक अमरद सूरत।
मैं देखी अर्स अजीम में, पोहोंच्या बका बीच खिलवत।। १६ ।।

रसूल साहब ने पहले से ही कुरान में लिखा है कि मैंने परमधाम के अन्दर मूल-मिलावा में जाकर पारब्रह्म (खुदा) की किशोर सूरत को देखा है।

हौज जोए बाग जानवर, जल जिमी अर्स मोहोलात।
और अनेक देखी न्यामतें, गुझ जाहेर करी कई बात।। १७ ।।

मैंने हौज कौसर ताल, जमुनाजी, बाग-बगीचे, जानवर, जमीन, जल और परमधाम की मोहोलातें तथा अनेक न्यामतें देखी हैं और श्री राजजी महाराज से कई बातें की हैं जो कुरान में लिखी हैं।

सो बरनन हुई हक सूरत, जासों महंमदें करी मजकूर।
नब्बे हजार हरफ सुने, नूर पार पोहोंच हजूर।। १८ ।।

रसूल साहब ने अक्षर के पार परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने पहुंचकर नब्बे हजार शब्द सुने। कई बातें हुई और श्री राजजी महाराज के स्वरूप की उन बातों को मैंने जाहिर किया है।

हक हुकमें कछू जाहेर किए, और छिपे रखे हुकम।
सो हुकमें अव्वल आखिर को, अब जाहेर किए खसम।। १९ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैंने श्री राजजी के हुकम से ही कुछ शब्द जाहिर किए और कुछ छिपाकर रखे। अब श्री राजजी महाराज ने स्वयं ही अपने हुकम से शुरू से आखिरत तक की हकीकत को जाहिर कर दिया है।

सब कोई कहे खुदा एक है, दूजा कहे न कोए।
कलाम अल्ला कहे एक खुदा, दूजा बरहक महंमद सोए।। २० ।।

दुनियां में सब कोई कहते हैं कि खुदा एक है। दो खुदा कोई नहीं कहता। कुरान भी कहता है कि खुदा एक है और मुहम्मद ने जो कहा वह सत्य है।

Nijanand App

सो महंमद कहे मैं उमत से, मुझसे है उमत।
मैं उमत बिना न पी सकों, हक हजूर सरबत।।२१।।

मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी कहती हैं कि मैं उम्मत (ब्रह्मसृष्टि) में से हूं। सब रूहें मेरे अंग हैं, इसलिए मैं अपनी रूहों को छोड़कर श्री राजजी महाराज के इश्क का शर्बत नहीं पी सकती।

खुदा एक महंमद साहेद, मसहूद है उमत।
ए तीनों अर्स अजीम में, ए वाहेदत बीच हकीकत।।२२।।

खुदा एक है और पूरी रूहों के सामने श्री श्यामाजी ने गवाही दी है, इसलिए श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें तीनों परमधाम में एक दिल एक स्वरूप हैं।

ए उपले माएने तीन कहे, और चौथा नूर मकान।
ए बातें मारफत की, सब मिल एक सुभान।।२३।।

यह बाहर दिखाने के लिए ही मैंने तीन कहे हैं और चौथा नूर मकान (अक्षरधाम) में अक्षर ब्रह्म है। यह चारों श्री राजजी महाराज के एक अंग हैं। यही मारफत का ज्ञान है।

रसूलें एता इत जाहेर किया, और हरफ रखे छिपाए।
हक मेला बड़ा होएसी, सो करसी जाहेर खिलवत आए।।२४।।

रसूल साहब ने आकर यही बात कुरान में जाहिर में बताई है और हकीकत के भेद छिपाकर रखे हैं। श्री राजजी महाराज और रूहों का यह बड़ा भारी मेला होगा। तब हम स्वयं खिलवतखाना (मूल-मिलावा) की बातें जाहिर करेंगे।

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत।
तामें दोए देसी हक साहेदी, हकी खोले सब हकीकत।।२५।।

मुहम्मद साहब की तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी कही हैं। जिनमें से दो बसरी और मलकी, अर्थात् रसूल साहब और श्यामा महारानी दोनों गवाही देंगे और तीसरी हकी सूरत श्री प्राणनाथजी सब हकीकत के भेद खोलकर बताएंगे।

हकी हक अर्स करे जाहेर, ऊग्या कायम सूर फजर।
होसी सब हैयाती, देख कायम खिलवत नजर।।२६।।

हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी, श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को जाहिर करेंगे। उनके द्वारा ही जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी का ज्ञान सबके संशय मिटाकर ज्ञान का सवेरा करेगा, जिसे सारी दुनियां देखकर अखण्ड मुक्ति प्राप्त करेगी।

ले हकी सूरत हक इलम, करसी जाहेर हक बिसात।
खिलवत भी छिपी ना रहे, करे जाहेर वाहेदत हक जात।।२७।।

श्री प्राणनाथजी महाराज जागृत बुद्धि के अखण्ड ज्ञान से परमधाम की सारी बातें जाहिर करेंगे और हकजात मोमिनों की एकदिली और मूल-मिलावा की सब छिपी बातें जाहिर करेंगे।

Nijanand App

फजर कही जो फुरमाने, सो अर्स बका हक दिन।
जो लों बका तरफ पाई नहीं, तो लों सबों ना रोसन॥ २८ ॥

कुरान में जिस फजर का ज्ञान कहा है, वही हक श्री राजजी महाराज के जाहिर होने का दिन है। जब तक अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की पहचान दुनियां को नहीं होती, तब तक दुनियां में अंधेरा है।

अब दिन कायम जाहेर हुआ, सबों रोसनी पोहोंची बका हक।
कायम किए सब हुकमें, बरस्या बका इस्क मुतलक॥ २९ ॥

अब वह अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज के जाहिर होने से दिन उग गया है (दिन निकल आया है) और सबको इसकी पहचान हो गई है। पहचान होने के बाद ही श्री राजजी के अखण्ड इश्क की बरसात हुई और फिर हुकम से सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति मिली (मिलेगी)।

रूह अल्ला चौथे आसमान से, आए खोली सब हकीकत।
ल्याए इलम लदुन्नी, कही सब हक मारफत॥ ३० ॥

श्री श्यामा महारानी ने चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) से आकर इस हकीकत को बताया। उन्होंने जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान लाकर दिया और श्री राजजी महाराज के छिपे भेद बताए।

जो कही महंमद ने, हक जात सूरत।
सोई कही रूहअल्ला ने, यामें जरा न तफावत॥ ३१ ॥

रसूल साहब ने हकजात मोमिनों का जो स्वरूप लिखा है, वही बात श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने कही है। इसमें जरा भी फर्क नहीं है।

जो अमरद कह्या महंमदें, सोई कही ईसे किसोर सूरत।
और सब चीजें कही बराबर, दोऊ मकान हादी उमत॥ ३२ ॥

रसूल साहब ने पारब्रह्म का स्वरूप अमरद कहा है। श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने उनका किशोर सरूप कहा है। दोनों स्वरूपों ने ही अक्षरधाम, परमधाम, श्यामाजी और रूहों की एक ही हकीकत बताई है।

हौज जोए बाग अर्स के, जो कछू अर्स बिसात।
कहूं केती अर्स साहेदियां, इन जुबां कही न जात॥ ३३ ॥

हौज कौसर तालाब, जमुनाजी और परमधाम के बाग-बगीचे और सब सामान दोनों ने एक जैसे बताए हैं। इस तरह से दोनों ने ही परमधाम की कितनी ही गवाहियां दीं जो कहने में नहीं आतीं।

बरकत कुंजी रूहअल्ला, हुआ बेवरा तीन उमत।
पूरी उमेदें सबन की, जाहेर होते हक सूरत॥ ३४ ॥

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान जो श्री श्यामाजी लेकर आए हैं, उससे जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि की पहचान हुई। श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान होते ही सबकी इच्छाएं पूरी हो गईं।

Nijanand App

ले ग्वाही दोऊ हादियों की, किया हक बरनन।
सब कौल किताबों के, हक हुकमें किए पूरन।। ३५ ।।

रसूल साहब और श्री श्यामा महारानी जी की गवाहियां लेकर श्री प्राणनाथजी ने श्री राजजी महाराज के स्वरूप को जाहिर किया। ग्रन्थों में लिखे अनुसार श्री प्राणनाथजी महाराज ने आकर वायदे पूरे कर दिए।

वाहेदत अर्स अखंड, असल नकल नहीं दोए।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, न नया पुराना होए।। ३६ ।।

परमधाम में सब अखण्ड है। वहां असल नकल नहीं होती और न घट-बढ़ ना नया-पुराना होता है।

रंग नंग रेसम मिलाए के, हेम जवेर कुंदन।
इन विध बनावे दुनियां, वस्तर और भूखन।। ३७ ।।

दुनियां अपने वस्त्रों और आभूषणों को नगों से रंगों से, रेशम से और सोने से बनाती है।

अर्स सरूप जो अखंड, ताको होए कैसे बरनन।
एक उतार दूजा पेहेरना, ए होए सुपन के तन।। ३८ ।।

परमधाम के स्वरूप अखण्ड हैं। उनका सपने के तन से कैसे वर्णन करूं, क्योंकि वहां पहनना और उतारना नहीं होता।

ए विध अर्स में है नहीं, जो करत है नकल।
ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, अर्स में एकै असल।। ३९ ।।

खेल में जो नकल है वह परमधाम में नहीं होती। परमधाम के अंग, वस्त्र, आभूषण सब एक ही हैं और असल हैं।

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, अखंड सरूप के एह।
इत नहीं भांत सुपन ज्यों, दुनी पेहेन उतारत जेह।। ४० ।।

परमधाम के स्वरूपों के अंग जैसे अखण्ड हैं, वैसे ही उनके वस्त्र और आभूषण भी अखण्ड हैं। वहां सपने की दुनियां की तरह पहनना और उतारना नहीं होता।

सब चीजें रूह के हुकमें, करत चाह्या पूरन।
रूह कछुए चित्त में चितवे, सो होत सबे माहें खिन।। ४१ ।।

रूहों की चाहना के अनुसार हुकम सब पूरा कर देता है और उसमें क्षण भर की भी देरी नहीं होती।

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, तिन सब अंगों सुख दायक।
सोभा भी तैसी धरे, जैसा अंग तैसा तिन लायक।। ४२ ।।

जैसे परमधाम के अंग हैं वैसे ही वहां के वस्त्र और आभूषण सब अंगों को सुख देने वाले हैं। शोभा और सुन्दरता भी वहां के अंग के अनुरूप ही होती है।

हर एक में अनेक रंग, हर एक में सब सलूक।
कई जुगतें हर एक में, सुख उपजत रूप अनूप।। ४३ ।।

हर चीज में अनेक रंग तथा सलूकी (शोभा, सजावट) होती है। इस तरह से प्रत्येक वस्तु में कई तरह की जुगतें हैं, जिनसे बेशुमार सुख उत्पन्न होता है।

Nijanand App

सब नंग में गुन चेतन, मुख थें केहेना पड़े न किन।
दिलमें जैसा उपजे, सो आगूं होत रोसन।।४४।।

परमधाम के सभी नग और गुण चेतन हैं, इसलिए किसी को मुख से कहना नहीं पड़ता। दिल में जैसी इच्छा होती है, वह पहले से ही बन जाती है।

अर्स सुख जो बारीक, सो जानत अरवा अर्स के।
ए झूठी जिमी जो दुनियां, सो क्यों कर समझे ए।।४५।।

परमधाम की यह खास बातें परमधाम की रूहें ही जानती हैं। इस झूठी दुनियां के लोग कैसे समझेंगे?

जेता वस्तर भूखन, सब रंग रस कई गुन।
रूह कछुए कहे एक जरे को, सो सब आगूं होत पूरन।।४६।।

परमधाम के वस्त्रों और आभूषणों में सब तरह के रंग, रस और गुण हैं, इसलिए रूह जरा भी मन में चाहे तो पहले ही पूरा हो जाता है।

अनेक सिनगार एक खिन में, चित्त चाह्या सब होत।
दिलमें पीछे उपजे, ओ आगे धरे अंग जोत।।४७।।

रूह के चित्त में चाहे अनुसार एक क्षण में उनके सिनगार बदल जाते हैं। दिल में चाहना बाद में आती है, सिनगार पहले ही बदल जाता है।

कई रंग रस नरमाई, कई सुख बानी जोत खुसबोए।
ए अर्स वस्तर भूखन की, क्यों कहूं सोभा सलूकी सोए।।४८।।

परमधाम के वस्त्रों और आभूषणों में कई तरह के रंग, रस, कोमलता और कई तरह के सुख, स्वर और खुशबू हैं, इसलिए उनकी सलूकी (शोभा) कैसे वर्णन हो?

मीठी बानी चित्त चाहती, खुसबोए नरमाई चित्त चाहे।
सोभा सलूकी चित्त चाही, ए अर्स सुख कहे न जाए।।४९।।

रूहों की चाहना के अनुसार इन वस्त्रों, आभूषणों में सुन्दर आवाज, खुशबू और नरमाई, शोभा और सलूकी है। ऐसे अखण्ड परमधाम के सुखों को शब्दों से कहा नहीं जा सकता।

अर्स बका की हकीकत, माहें लिखी कतेब वेद।
खोले जमाने का खावंद, और खोल न सके कोई भेद।।५०।।

अखण्ड परमधाम की हकीकत वेद और कतेब में लिखी है, परन्तु आखिरी जमाने के मालिक श्री प्राणनाथजी के बिना इन भेदों को कोई खोल नहीं सकता।

लिख्या वेद कतेब में, सोई खोले जिन सिर खिताब।
देसी मुक्त सबन को, करके अदल हिसाब।।५१।।

वेद और कतेब (कुरान) में लिखा है कि शास्त्रों के छिपे रहस्य और कुरान के रहस्यों को खोलने की उपाधि खुदा को ही है, जो कुल ग्रन्थों और कुरान के गुझ भेदों के रहस्य खुदा के बिना कोई खोल ही नहीं सकता। जो खोलेगा वही खुदा (पारब्रह्म) होगा, वही अन्त समय में संसार का न्यायाधीश बनकर न्याय करेगा और संसार को अखण्ड मुक्ति देगा।

Nijanand App

सातों सरूप अखंड, मैं बरनन किए सिर ले।
दो रास पांच अर्स अजीम, बोझ दिया न सिर सरूपों के।।५२।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने अखण्ड के सात स्वरूपों का वर्णन किया है। दो रास के सिनगार तथा पांच परमधाम के सिनगार। रास में एक श्री राजजी का और एक श्री श्यामाजी का और परमधाम में दो श्री श्यामाजी के और तीन श्री राजजी के, परन्तु इनके वर्णन करने में मैंने श्री राजजी और श्री श्यामाजी का सहारा नहीं लिया।

जो लों इलम को हुकमें, कह्या नहीं समझाए।
तो लों सो रूह आप को, क्यों कर सके जगाए।।५३।।

जब तक श्री राजजी महाराज इलम को हुकम नहीं करते, तब तक इलम रूह को जगा नहीं सकता।

जब रूह को जगावे हुकम, तब रूह आपै छिप जाए।
तब रहे सिर हुकम के, यों हुकमें इलम समझाए।।५४।।

जब हुकम रूह को जगा देता है, तो रूह छिप जाती है और श्री राजजी का हुकम सामने आ जाता है। तब सब जिम्मेदारी हुकम के सिर पर आ जाती है। ऐसी श्री राजजी महाराज के हुकम से इलम द्वारा हमें समझ आ रही है।

जाहेर किया हक इलमें, रूह सिर आया हुकम।
सोई करे हक बरनन, ले हकै हुकम इलम।।५५।।

श्री राजजी के जागृत बुद्धि की वाणी से समझ आ गया कि श्री राजजी महाराज के सिनगार को, श्री राजजी महाराज के हुकम से, श्री राजजी महाराज के जागृत बुद्धि के ज्ञान द्वारा वर्णन करने का अधिकार मुझे मिला है।

हुकमें बेसक इलम, और हुकमें जोस इस्क।
मेहेर निसबत मिलाए के, बरनन करे अर्स हक।।५६।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से ही जागृत बुद्धि का ज्ञान, जोश, इश्क, मेहर और निसबत मिली है, जिससे मुझे श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम का वर्णन करना है।

एही आसिक करे बरनन, और आसिकै सुने इत।
ए केहेवे लेवें मोमिन, या रसूल तीन सूरत।।५७।।

अब इनका (हक का और अर्श का) वर्णन मैं करती हूं। मोमिन सुनेंगे। यह कहने वाले और लेने वाले मोमिन हैं, या मुहम्मद साहब की तीन सूरतें (बसरी, मलकी और हकी) हैं।

मैं हक अर्स में जुदे जानती, ल्यावती सब्द में बरनन।
जड़ में सिर ले ढूंढ़ती, हक आए दिल बीच चेतन।।५८।।

मैं परमधाम में श्री राजजी महाराज को रूहों से अलग जानती थी। यह मेरी भूल थी। अब संसार में दुनियां की तरह सब धर्मग्रन्थों को सिर पर लेकर पारब्रह्म को ढूंढ़ती फिरती तो मैं भी निराकार से आगे न जा पाती, परन्तु श्री राजजी महाराज ने मेहर की। मेरे ढूंढ़ने से पहले ही मेरे इस नश्वर तन में आकर बैठ गए।

Nijanand App

कहूं इनका बेवरा, सिर हुकम लेसी मोमिन।
सो हुकमें समझ जागसी, मिले हुकमें हक वतन।।५९ ।।

अब इनका विवरण बताती हूं। जो मोमिन होंगे वह इसे स्वीकार करेंगे। वह श्री राजजी का हुकम मानकर जागृत बुद्धि के ज्ञान को समझकर जागेंगे और फिर अपने घर परमधाम में मिलेंगे।

हुकमें चले हुकम, हुकमें जाहेर निसबत।
हुकमें खिलवत जाहेर, हुकमें जाहेर वाहेदत।।६० ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से ही हुकम चलता है और उनके हुकम से ही मेरी निसबत और मूल-मिलावे में रूहों की एकदिली जाहिर होती है।

हुकमें दिल में रोसनी, सुध हुकमें अर्स नूर।
मुकैयद मुतलक हुकमें, हुकमें अर्स सहूर।।६१ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से ही दिल में ज्ञान आता है तथा परमधाम की पहचान होती है। हुकम से वेद कतेब का सीमित ज्ञान और परमधाम का संशय रहित ज्ञान और अर्श की हकीकत जाहिर होती है।

कोई दम न उठे हुकम बिना, कोई हले ना हुकम बिना पात।
तहां मुतलक हुकम क्यों नहीं, जहां बरनन होत हक जात।।६२ ।।

हुकम के बिना एक सांस भी नहीं आती और न पत्ता ही हिलता है। जहां हकजात रूहें (मोमिन), अर्श और हक का वर्णन होता हो तो उनके पास जागृत बुद्धि का बेशक इलम और हुकम क्यों नहीं होगा?

हक बातें रूह हुकमें सुने, हुकमें होए दीदार।
हुकमें इलम आखिरी, खोले हुकमें पार द्वार।।६३ ।।

हुकम से ही रूह श्री राजजी महाराज की बातें सुनती है और हुकम से ही दर्शन करती है। हुकम से ही जागृत बुद्धि का अखण्ड ज्ञान प्राप्त कर पार के दरवाजे खोलती है।

ए बरनन होत सब हुकमें, आया हुकमें बेसक इलम।
हुकमें जोस इस्क सबे, जित हुकम तित खसम।।६४ ।।

यह सब जो वर्णन मैं कर रही हूं, वह सब हुकम से ही हो रहा है और हुकम से ही जागृत बुद्धि, जोश और इश्क सभी मिलता है, अर्थात् जहां हुकम है, वहीं श्री राजजी महाराज हैं।

जब ए द्वार हुकमें खोलिया, हुकमें देख्या हक हाथ।
तब रही ना फरेबी खुदी, वाहेदत हुकम हक साथ।।६५ ।।

जब श्री राजजी महाराज के हुकम से पार के दरवाजे खुल गए तब झूठे संसार का अहंकार मिट गया। फिर श्री राजजी महाराज के साथ ही रूहों को मिलकर बैठे देखा।

पेहेले हुकमें इलम जाहेर, हुआ हुकमें हक बरनन।
मैं हुकम लिया सिर अपने, अब रूह छिप गई हक इजन।।६६ ।।

पहले हुकम ने इलम से पहचान कराई और फिर वर्णन कराया। मैंने अपना आप खोकर (अहंकार मिटाकर) श्री राजजी महाराज के हुकम को अपने सिर लेकर वर्णन किया। अब उनके ही हुकम से मेरी रूह छिप गई।

Nijanand App

हक बैठे दिल अर्स में, कह्या हकें अर्स दिल मोमिन।
रूहें पोहोंचाई हकें अर्स में, हक बैठे अर्स दिल रूहन।। ६७ ।।

श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल को अर्श करके बैठे हैं। श्री राजजी महाराज ने मोमिन के दिल को अर्श कहा है। मोमिनों के दिल में बैठकर रूह (मोमिनों) को परमधाम में पहुंचाते हैं।

हक रूहें बीच अर्स के, नहीं जुदागी एक खिन।
हुकमें नैन कान दीजिए, अब देखो नैनों सुनो वचन।। ६८ ।।

श्री राजजी महाराज और रूहों के बीच परमधाम में एक क्षण की भी जुदाई नहीं है। अब हुकम के द्वारा ही श्री राजजी को अपने निज नैनों से देखो और आत्मा के कानों से उनकी बातों को सुनो।

अब हकें हुकम चलाइया, खुदी फरेबी गई गल।
रास खेल रस जागनी, हुआ रूहों सुख असल।। ६९ ।।

अब श्री राजजी महाराज के हुकम से मेरी फरेबी (अहंकार) समाप्त हो गई है। इसलिए, हे मेरी आत्मा! तू श्री राजजी महाराज के साथ जागनी रास खेलकर उनके इश्क का रस ले। यही रूह का असल सुख है।

कहे हुकमें महामत मोमिनों, हकें पोहोंचाई इन मजल।
कहे सास्त्र नहीं त्रैलोक में, सो हक बैठे रूहों बीच दिल।। ७० ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से मोमिनों को कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने ही मुझे इस दर्जे तक पहुंचाया है। वेद और शास्त्र कहते हैं कि पारब्रह्म चौदह लोकों में नहीं है। वह पारब्रह्म श्री राजजी महाराज रूहों के दिल में साक्षात् बैठे हैं।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २०१ ॥

आतम फरामोसी से जागे का प्रकरण

ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इस्कें आतम खड़ी होए।
जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी के हुकम से मेरे दिल में ऐसा लगता है कि इश्क से आत्मा जागृत हो जाएगी, क्योंकि इश्क आने से श्री राजजी महाराज का स्वरूप दिल में आ जाएगा और रूह जाग जाएगी।

हक सूरत वस्तर भूखन, बीच बका अर्स के।
तिनको निरने इन जुबां, क्यों कर केहेवे ए।। २ ।।

अखण्ड परमधाम के बीच विराजमान श्री राजजी के स्वरूप का वर्णन यहां की जबान से कैसे करें?

जिन दृढ़ करी हक सूरत, हक हुकमें जोस ले।
अर्स चीज कही सो मेहेर से, पर बल इन अंग अकल के।। ३ ।।

जिन्होंने श्री राजजी के हुकम और जोश को लेकर श्री राजजी महाराज और परमधाम का कुछ वर्णन किया, तो यह सब श्री राजजी की मेहेर से ही हुआ है, परन्तु संसार की अकल की शक्ति से कहा।

Nijanand App